ISSN: 2349-4654
नाद-नर्तन जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूज़िक वर्ष : 7, अंक-1, अप्रैल 2019

तबला वादन में रियाज का महत्त्व

सचिन कचोटे

शोधार्थी, संगीत विभाग, द. महाराजा सयाजीराव यूनिवर्सिटी, वड़ोदरा

Paper recieved on : April 24, 2019, Return : May 04, 2019, Accepted : May 11, 2019

सार-संक्षेप

शास्त्रीय संगीत की अभिजात परंपरा में 'रियाज़' का एक विशेष स्थान और महत्त्व है। संगीत यह एक प्रायोगिक कला है, जिसका श्रेष्ठत्व केवल योग्य रियाज़ से ही सिद्ध हो पाता है। अपने 'बनावट तथा बाज' के कारण तबला वाद्य ने भारतीय संगीत में सर्वश्रेष्ठ अवनद्ध वाद्य के रूप में गौरव प्राप्त किया। साथ संगत के साथ-साथ स्वतंत्र रूप से (एकल वादन) प्रस्तुत होने वाले इस प्रमुख वाद्य का रियाज़ भी उतना ही श्रेष्ठतम हैं। वर्तमान में, तबले का हुआ विकास और उसका प्रमुख स्थान यह केवल विद्वानों ने आज तक किए हुए अथक मेहनत का फल है। तबले की परंपरागत रियाज़ पद्धति से लेकर आधुनिक रियाज़ पद्धति के बारे में विद्वानों ने यथा समय अपने विचार रखे है तथा तबला साधकों को अपने ज्ञान से लाभान्वित किया है। संगीत कला की साधना में गुरु के मार्गदर्शन में किए गए रियाज़ का बड़ा महत्त्व है। इसलिए योग्य गुरु तथा उनके मार्गदर्शन में किया गया रियाज़ ही एक सफल कलाकार की अभिव्यक्ति होती है। इन्हीं विचारों का आदर्श लेकर तालवाद्य तबला ने अथक रियाज़ के जरिए संगीत जगत में अपनी विशेष पहचान बना ली है। तबले के विविध घराने तथा उनकी वादन पद्धति, विद्वानों के विचार, साहित्य संपन्नता तथा रियाज़ की विविध पद्धतियाँ ये तबले की समृद्धता तथा सर्वगुण संपन्नता है। शास्त्रीय संगीत का मूलभूत तत्व हैं सौंदर्य और रियाज़ सौंदर्य का महत्त्वपूर्ण अंग है। प्रस्तुत, शोध प्रपत्र में मैंने तबले के इस सौंदर्य तत्व-रियाज़ के बारे में वर्णन किया है। साथ ही इस शोध प्रपत्र के माध्यम से मेरा यह प्रयास भी हैं कि तबले की 'आदर्श रियाज़ पद्धति' पर प्रकाश डाल सकूँ। उत्तरोत्तर हुई तबले के इस विकास यात्रा में तबले के रियाज़ पद्धति में भी काफी बदलाव हुआ है। इन सभी विधायक परिणामों की चर्चा करना, यह भी इस शोध प्रपत्र का उद्देश्य है। प्रस्तुत शोध पत्र में हम तबला वादन और उसका रियाज़ इन बातों की विस्तृत चर्चा करेंगे। साथ-साथ विद्वानों के विचार तथा तबले की रियाज़ पद्धति पर भी प्रकाश डालेंगे। तबला वादन और रियाज़ के अंतर्गत तबले की विभिन्न रचना प्रकारों का रियाज़ इसके बारे में भी विचार करेंगे। इस प्रकार प्रस्तुत शोध-पत्र के परिचय का परामर्श लेकर इस घटक के अंतर्गत अन्य और संबंधित विषयों का दिग्दर्शन करना, यह इस शोध-विषय का प्रमुख उदेश्य है।

मुख्य शब्द : तबला वादन, रियाज़, फर्रूखाबाद, पेशकार, कायदा, लड़ी

शोध-पत्र

संगीत कला में 'रियाज़' का अनन्य साधारण महत्त्व है। 'रियाज़' याने 'साधना' जो परंपरा से गुरुमुखद्वारा तथा उनके योग्य तालीम से मिलती है। इसी परंपरा को शास्त्रीय संगीत की 'अभिजात परंपरा' के नाम से जाना जाता है। गुरुमुख से विद्या प्राप्त होना यह भारतीय अभिजात संगीत की विशेषता है, जो संगीत परंपरा का महत्त्व दर्शाती है। गुरु के मार्गदर्शन में की गयी तालीम याने 'रियाज़', जो शास्त्रीय संगीत का मूलभूत सत्य है। संगीत कला की कोई भी विधा—गायन, वादन तथा नृत्य में 'रियाज़' का अपना एक अस्तित्व तथा श्रेष्ठत्व है। संगीत कला और रियाज़ का बड़ा ही पूरक परस्पर संबंध है। अपितु, बगैर रियाज़ के संगीत कला की कल्पना ही नहीं की जा सकती। ठीक इसी प्रकार से भारतीय सर्वश्रेष्ठ तालवाद्य—तबला के बारे में भी उपरोक्त विचार बिलकुल योग्य है। वादन विधा के अंतर्गत अपनी एक अलग और विशेष पहचान बनाने वाले तबला इस वाद्य ने संगीत जगत में सफलता की चोटियाँ पार की है। इसकी वजह भी यह है कि इस वाद्य का 'बाज' याने वादन-शैली, और उसकी 'बनावट' यह दो महत्त्वपूर्ण अंग से तबला वाद्य ने अपना श्रेष्ठत्व सिद्ध किया है। तबले के इस विकसनशील यात्रा में विद्वानो द्वारा दिया गया योगदान, उनके विचार तथा उनके द्वारा विकसित वादन-शैली और रियाज़ पर विवेचन इत्यादि बातों की कलश्रुति है—वर्तमान में तबला वाद्य का स्वतंत्र स्थान। एकल तबलावादन के जरिए स्वतंत्र रूप से प्रस्तुत होने वाला प्रमुख ताल वाद्य, ऐसा सन्मान आज तबला वाद्य ने प्राप्त किया है। तात्पर्य, ऐसे श्रेष्ठ ताल वाद्य का रियाज़ भी उतना ही श्रेष्ठ होगा।

रियाज़ संगीत यह एक गुरुमुखी विद्या है, जो परंपरा से मिलती है। संगीत कला के इस अभिजात परंपरा में 'रियाज़' का महत्त्व अनन्यसाधारण है। 'रियाज़' याने 'साधना'। संगीत यह एक प्रायोगिक कला है, जो अपनी प्रस्तुति से सिद्ध होती है। कला के प्रभावी प्रस्तुतिकरण के लिए

'रियाज़' का बड़ा ही महत्त्व है। बगैर रियाज़ के प्रभावी प्रस्तुतिकरण की कल्पना भी नहीं की जा सकती। संगीत की कोई भी विधा में रियाज़ का बड़ा ही गहरा और पूरक संबंध है और सभी विधा में रियाज़ का अपना एक अलग ही स्थान तथा महत्त्व है। यह एक आंतरिक परस्परपूरक संबंध है, जो परिणामकारक और प्रभावी सिद्ध होता है। जैसे की पहले कहा गया की बगैर रियाज़ से प्रभावी गायन या वादन नहीं हो सकता, उसी तरह केवल रियाज़ से ही कुशल कलाकार भीं नहीं हो सकता। ऐसा कहने का तात्पर्य यह है कि केवल रियाज़ नहीं बल्कि अभ्यासपूर्ण रियाज़ से और सबसे महत्त्वपूर्ण यह है कि गुरु के मार्गदर्शन से किए गये रियाज़ से ही एक कुशल कलाकार होना संभव है। संगीत कला में रियाज़ गुरु के मार्गदर्शन सें, विविध अंगों से और विविध दृष्टिकोण से होना बहुत जरूरी है। बगैर गुरु-मार्गदर्शन से रियाज़ की कल्पना केवल असंभव। ऐसे 'रियाज़' को हम केवल रियाज़ न कहते हुए एक 'आदर्श रियाज़' कहेंगे। एक अभ्यासपूर्ण रियाज़ ही 'आदर्श रियाज़' हो सकता है, जो समझ कर किया जाता है।

ज्येष्ठ तबला वादक और गुरु पंडित सुधीर माईणकर अपने 'तबलावादन: कला और शास्त्र' इस ग्रंथ 'रियाज़' को परिभाषित कहते हुए कहते है—

तालीम का सामान्य अर्थ है—मेहनत, रियाज़। ''संगीत में गुरु के योग्य मार्गदर्शन द्वारा ठीक तरहसे समझकर किए जाने वाले रियाज़ को 'तालीम' कहा जाता है।''[1]

रियाज़ की सामान्य अर्थ—

'रियाज़ याने अखंड साधना, साधना के लगातार आवर्तन की प्रक्रिया।' गुरुमुख द्वारा परंपरा से मिली संगीत विद्या को प्राप्त करने हेतू और भलिभाँति निभाने के लिए शिष्य द्वारा ली गयी अविश्रांत मेहनत यानी 'रियाज़'। संगीत कला में 'रियाज़' यह एक मूलभूत सत्य है। रियाज़ यह एक अखंड प्रक्रिया है, जो अपने आप में ऊर्जा और तेज का प्रतीक है। यह तपश्चर्या याने रियाज़। रियाज़ रूपी यह संगीत साधना आगे चलकर तपस्या बनती है। रियाज़ का निदीध्यास संगीत के सूक्ष्मनाद की अनुभूति का द्योतक है मात्र प्रत्यक्ष नादब्रह्म के साक्षात्कार के लिए एक योग्य तपस्वी साधक होना जरूरी है, इसे ही रियाज़ की फलश्रुती कहा गया है। लेकिन, ये सब क्रिया गुरु सहवास और गुरु मार्गदर्शन के बिना केवल असंभव है, इसलिए रियाज़ योग्य गुरु के मार्ग दर्शन से होना बहुत महत्त्वपूर्ण है।

ऐसे ही, मार्गदर्शन युक्त और अभ्यासपूर्ण रियाज़ की विस्तृत चर्चा हम प्रस्तुत शोध विषय 'तबला वादन में रियाज़ का महत्त्व' के अंतर्गत करेंगे।

तबला वादन और रियाज़

संगीत कला में 'ताल वाद्य का एक विशेष महत्त्व है। लयतत्व एक प्रमुख तालवाद्य के रूप में 'तबला' इस वाद्य ने सर्वश्रेष्ठ तालवाद्य के रूप में गौरव प्राप्त किया है। वर्तमान में, बगैर तबला संगत के संगीत कला के कोई भी महफिल की कल्पना नहीं की जा सकती और सबसे महत्त्वपूर्ण बात है' 'एकल तबलावादन' के रूप में इस वाद्य ने हिमालय की ऊँचाई पाई है। यह इस वाद्य की सबसे बड़ी उपलब्धि है। कहने का तात्पर्य यह है की ऐसे सर्वश्रेष्ठ तालवाद्य का रियाज़ भी उतना ही श्रेष्ठतम होगा और होना भी चाहिए। तबला वादन में रियाज़ का अनन्य साधारण महत्त्व है। तबलावादन और रियाज़ इस घटक में हम रियाज़ की चर्चा-बौद्धिक रियाज़ और शारीरिक रियाज़ इन दो अंगों से विस्तृत रूप में करेंगे। प्रथमत: हम शारीरिक रियाज़ के बारे में चर्चा करेंगे और उसकी विशेषता जानने की कोशिश करेंगे।

शारीरिक रियाज़

शोधार्थी का ऐसा मानना है कि तबला वादन एक कष्ट साध्य विद्या है, जो बगैर मेहनत के प्राप्त नहीं हो सकती। लेकिन, इस कष्टप्रद मेहनत के लिए 'शारीरिक रियाज़' बहुत जरूरी है और इस रियाज़ के लिए अपना शरीर यानी देह निरोगी और स्वस्थ रहना उससे भी जरूरी है। कोई भी मेहनत का काम केवल सशक्त और सुदृढ़ शरीर से ही मुमकीन होता है। एक कहावत है—'आरोग्यम् धन संपदा' यानी स्वस्थ आरोग्य ही शरीर की सबसे बड़ी धन-संपदा है। इस स्वस्थ शरीर रूपी धन-संपदा से ही संगीत साधक रियाज़ के लिए प्रस्तुत हो सकता है और रियाज़ के लिए उसका स्वागत भी होता है। कहने का तात्पर्य यह है की, बगैर स्वस्थ शरीर के रियाज़ की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इसके लिए, तबला साधक को नित्य व्यायाम, योग-प्राणायाम करना बहुत जरूरी है। इससे, न केवल शरीर स्वास्थ मिलता है, बल्कि साधक अपने आपको प्रसन्नचित्त और संतुष्ट महसूस करता है। इन सभी बातों का बड़ा ही विधायक और पूरक परिणाम साधक के रियाज़ पर होता है। तबला साधक अपने कष्टप्रद तबलावादन रियाज़ के लिए पूरी तरह से प्रस्तुत हो पाता है और अपने आप को उसके पात्र भी समझता है। इसका सबसे अच्छा और विशेष परिणाम यह होता है कि तबलावादन अपने रियाज़ की शृंखला को अखंड रख पाता है और काफी समय तक अपना नियोजित अथक रियाज़ कर पाता है। इस प्रकार, संगीत कला की कोई भी विधा में रियाज़ के लिए स्वस्थ शरीर होना बड़ा ही महत्त्व रखता है, ऐसा मेरा विचार है। गायक जैसे एक-एक सुरों का उनके लगाव का रियाज़ करता है उसी प्रकार तबला वादक एक-एक बातों को रियाज़ लगातार, घंटों बैठकर करता है और उन बातों पर रियाज़ से ही अधिकार प्राप्त करता है। इस प्रकार, शारीरिक रियाज़ में तबला वादक को अपना शरीर स्वस्थ और निरोगी रखना यह प्राथमिक और बहुत ही मूलभूत तथा महत्त्वपूर्ण बात हैं। मेरा ऐसा मत है कि, इस मूलभूत सत्य के आधार पर ही साधक 'रियाज़' रूपी मंदिर में प्रवेश कर पाता है और इसके आगे शुरू होती है उसकी अखंड संगीत साधना याने 'रियाज़...।'

शारीरिक रियाज़ के अंतर्गत आगे हम कुछ ओर भी उपघटक देखेंगे, जैसे—

अक्षरसाधना

अरविंद मुलगाँवकर कहते हैं, 'एक एक सुरों को साधना चाहिए'।[2] उसी प्रकार, तबला वादक ने अपने रियाज़ में एक-एक अक्षर की साधना करना बहुत जरूरी है। उसके बाद बोल पंक्तियों का रियाज़

और कायदे-रेले का रियाज़ होना चाहिए। इस रियाज़ को 'अक्षर साधना' कहते है। तबला वादन के रियाज़ में 'अक्षर साधना' का बड़ा ही महत्त्व है। यहाँ पर एक बात महत्त्वपूर्ण है की साधना में एकाग्रता और स्थिरता की बहुत जरूरी है। इसी दिशा में शोधार्थी का अनुभव है कि तबला वादक को अपने रियाज़ के लिए अपने चित्त में एकाग्रता और बैठक में स्थिरता होना जरूरी है। बिना एकाग्रता और स्थिरता के कोई भी साधक अपने रियाज़ में एकरूप नहीं हो सकता। इसके लिए साधक को नित्य व्यायाम, योग-प्राणायाम करना अत्यंत आवश्यक आहे, जिसका महत्त्व हमने पहले देखा है। इसी को तबला वादक अपने रियाज़ में खुद को स्वस्थ, प्रसन्न और सुलभता महसूस कर पाता है। घंटों बैठकर अथक रियाज़ करने के लिए और इसमें सुलभता के लिए उपरोक्त बाते अत्यंत आवश्यक है। इस प्रकार से, हमने रियाज़ और उसकी पूर्वतैयारी के बारे में देखा।

एक प्राचीन कहावत है—

एक साधे सब साधे। सौ साधे सब जाय।

यह उदाहरण अरविंद मुलगांवकर ने एक साक्षात्मकार में कहा था।[3]

इस दोहे का मतलब यह है कि तबले का रियाज़ एक ही बात पर (रचनापर) एकाग्र होकर अगर हम उसका नित्य रियाज़ करेंगे तो उससे अनेक बातों पर याने रचना पर हम अधिकार पा सकते हैं, लेकिन अनेक बातें एक ही साथ करने से याने साधन करने से सब कुछ नष्ट हो जाएगा, कुछ भी हाथ नहीं लगेगा। मेरे विचार से तबला वादक के रियाज़ के लिए उपरोक्त दोहा अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। जैसे, एक ही बोल पंक्ति के नित्य रियाज़ से उस बोल पंक्तियाँ के आधार पर रची हुए अनेक रचनाएँ जैसे कायदा, रेला चलन आदि के वादन में सुलभता प्राप्त होगी और उन पर अधिकार प्राप्त हो सकता है। इससे ही हमें बोलो की 'अक्षरसाधना' का महत्त्व दिखायी देता है। जैसे, उदाहरण—

(अक्षरसाधना : उदाहरण – कायदा तीनताल)

धाती	टधा	तीट	धाधा	।	तीट	धागे	तींना	किना	।
x					2				
ताती	टता	तीट	धाधा	।	तीट	धागे	धींना	गिना	।
0					3				

इस रचना के रियाज़ से तबला वादक को 'तीट' इस बोल का रियाज़ और 'तीट' बोल के आधार से कायदे को देखने का दृष्टिकोण मिलता है। 'तीट' के रियाज़ के लिए यह दिल्ली का एक प्रसिद्ध कायदा है। संक्षेप में, उपरोक्त रचना के रियाज़ से तबला वादक को 'तीट' बोल से एक बल मिलता है और वह बोल हाथ पर चढ़ने में सुलभता-सहजता महसूस होती है और उस बोल पर अधिकार प्राप्त होता है। ऐसी और भी बोलपंक्तियाँ और रचानाएँ तथा उनके रियाज़ बारे में हम आगे भी चर्चा करेंगे। ऊपर दी हुई रचना में 'तीट' इस बोल की अक्षरसाधना होना बहुत आवश्यक होता है। रचना की बराबर लय में लगातार आवर्तनों की वादन शृंखला ही 'अक्षरसाधना' कहलाती है।

अक्षर साधना के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण बाते और तत्व

- अक्षरसाधना के पूर्व जिन अक्षरों का याने बोलों का रियाज़ करना है, उनकी निकास पद्धति गुरु द्वारा भलीभाँति जानना आवश्यक है।
- योग्य निकास से ही बोलो में स्पष्टता, शुद्धता आती है और आगे, रियाज़ से उन बोलो के वादन में सहजता आ पाती है।
- प्राथमिक अक्षर साधना बराबर लय में होना अत्यंत आवश्यक है।
- बराबर लय याने एकपट (एकगुन) में—धीमी लय में अक्षरसाधना करने के अनेक फायदे होते है, जिसका सीधा परिणाम वादक के वादन पर होता दिखायी देता है।
- वादक को अपने रियाज़ के नियोजित समय के आधे से अधिक भाग में बराबर लय में रियाज़ करना बहुत ही फायदेमंद साबित होता है, और ऐसा करना अत्यंत आवश्यक है।
- बराबर लय में अक्षर साधना से वादक के 'दमसास' यह गुण में विशेष वृद्धि होती है। इसी ऊर्जा के साध वादक लंबे समय तक या अपने नियोजित समय पूर्ण होने तक अथक रियाज़ कर पाता है।
- 'दमसास' के साथ साथ वादक के वादन गति पर भी अक्षर साधना का बड़ा ही पूरक परिणाम होता है। गतिमानता के साथ वादन करने का सहस्य बराबर लय में की गयी अक्षरसाधना में ही होता है, ऐसा मेरा विचार है।
- इस प्रकार के रियाज़ से साधक ऊपर के मंजिल में भी उतनी ही स्पष्टता से वादन कर पाता है। यह उसकी सबसे बड़ी उपलब्धि होगी।

- बराबर लय में वादन करने से याने रियाज़ करते समय वादक थकता नहीं, जो सबसे महत्त्वपूर्ण है।
- बराबर लय की अक्षरसाधना से वादक में 'सहनशीलता' यह गुण का अंतर्गत आचरण होता है, जो कलाकार का एक महत्त्वपूर्ण गुण बताया गया है।

इस प्रकार, अक्षर साधना का महत्त्व हमने देखा। अखंड रियाज़ में सफल होने हेतू अक्षरसाधना यह पहली और महत्त्वपूर्ण सीढ़ी है। आगे हम, तबले कि विभिन्न रचनाओं में रियाज़ का महत्त्व, इस पर विस्तृत चर्चा करेंगे।

विस्तारक्षम तथा पूर्वसंकल्पित रचनाओं में तबले के रियाज़ की पद्धति और रियाज़ का महत्त्वः-

इस उपघटक के अंतर्गत हम तबले की विस्तारक्षम रचनाएँ जैसे पेशकार, कायदा, रेला, चलन इत्यादी पूर्वसंकल्पित रचनायें गतटुकड़ा, तिहाई, चक्रदार इत्यादी संकल्पनाओं का और उनके रियाज़ पद्धति का विचार करेंगे। तबले की इन सभी रचनाओं का वादन में अपना अपना एक अलग स्थान और विशेष महत्त्व है, इसलिए इन रचनाओं का रियाज़ भी विशेष महत्त्व रखता है।

पेशकार

स्वतंत्र रूप से और उपज अंग से विस्तारित होने वाली विस्तारक्षम रचना याने पेशकार। 'पेशकार' यह स्वतंत्र तबला वादन की महत्त्वपूर्ण विस्तारक्षम रचना है। पेशकार वादन के लिए वादक को तालीम प्राप्त होना आवश्यक है। गुरु की अच्छी तालीम, योग्य रियाज़ से ही वादक 'पेशकर' समझदारी से और आत्म-विश्वास से प्रस्तुत कर पाता है। पेशकर वादन में विचारों की प्रगल्भता बहुत महत्त्व रखती है। इसलिए पेशकार प्रस्तुति प्रभावी होने हेतू रियाज़ का बहुत महत्त्व है। पेशकार विविध लयकारी और उपज अंग से, स्वतंत्र विचार से प्रस्तारित होता है, इसलिए पेशकार में विविध लय-लयकारियों की 'पढंत' बहुत महत्त्व रखती है। ''पढंत' अर्थात् बोलो को स्पष्टता से बोलना पढ़ना। सुधीर मईणकर अपने एक साक्षात्कार में बताते हैं—'पढंत यह एक' बौद्धिक रियाज़ है।''[4] 'पढंत' की विस्तृत चर्चा हम 'बौद्धिक रियाज़' इस घटक के अंतर्गत आगे करेंगे।

जैसे की हमने पहले कहा कि 'पेशकार' वादन में लय-लयकारियों का अभ्यास, पढंत जरूरी है। उसके साथ-साथ इन सबका 'चिंतन' भी होना बहुत जरूरी है। एक रियाज़ी तबलावादक के लिए यह एक बड़ी ही महत्त्वपूर्ण बात है, जिसके अनुभव की प्रतिती वो अपने वादन प्रस्तुति में जरूर कर पाता है। 'पेशकार' यह स्वतंत्र वादन की एक ऐसी रचना हैं जिसमें तबले के लगभग सभी बोलों का केवल वादन ही नहीं बल्कि, उनका वादन काफी वज़नदार, स्पष्ट और आसदार होना जरूरी होता है। हालाँकि, अलग-अलग बोलों पे अधिकार पाने हेतू विद्वानों ने कायदे-रेले की निर्मिती की है और उनके रियाज़ को महत्त्व दिया है।

कायदे-रेले में आये हुए और रियाज़ से स्पष्ट हुए बोल उतनी ही स्पष्टता से, नादमयता से पेशकार में बजना अपेक्षित होता है। नज़ाकत और सौंदर्यपूर्ण से वादन होना चाहिए। इस प्रकार, पेशकार वादन में बहुत सी जिम्मेदारियों वादक को निभानी होती है, जो केवल रियाज़ से ही पूर्ण हो पाती है।

पेशकार : तीनताल

धी ऽऽ क्ड धीं ऽ धा ऽ	ऽ ग धा ऽ तीत् धा ऽ	धा ऽ तीं ऽ ना ऽ धा ऽ	ऽ क्ड धा ऽ तीं ऽ ना ऽ	।
x				
तक्घिडाऽ न धा ऽ	तीत्धा ऽ धीं ऽ ना ऽ	धा ऽ घे ऽ ना ऽ धा ऽ	ऽ क्ड धा ऽ तीं ऽ ना ऽ	।खाली
2				

पेशकार के बंदिश में ही उसके अंतर्गत महत्त्व दिखाई देता है। पेशकार में उपरोक्त बोलों का वादन किस तरीके से होना चाहिए? यह इसके 'पढंत' से ही पता चल जाता है। अभ्यासपूर्ण रियाज़ से किए गए पेशकार वादन से वादक का बुद्धिकौशल्य और उसका व्यक्तित्व वादन में झलकता है। इस प्रकार, 'पेशकार' का स्वतंत्र तबला वादन में विशेष महत्त्व है।

कायदा

विश्वनाथ शिरोड़कर कहते है, 'कायदे से हाथ बनता है।'[5] विद्वानों का यह एक अनुभवपूर्ण विचार है, जो महत्त्वपूर्ण है। विविध बोलों के कायदे के रियाज़ से ही वादक उन बोलों पर अधिकार प्राप्त होता है। सभी बोल भली-भाँति हाथ पर चढ़ पाते है, जिसका स्वरूप कायम रहता है। कायदे के रियाज़ से ही हाथ 'तैयार' हो पाता है। वादक को भिन्न-भिन्न बोलों के कायदों का रियाज़ अपने नित्यसाधन में करना बहुत जरूरी है। कायदे के मुख का बराबरी लय में रियाज़ होने के पश्चात दुगुन में दोहरा और महत्त्वपूर्ण पलटो को रियाज़ होना आवश्यक है। विद्वानों ने ऐसे महत्त्वपूर्ण पलटो को 'मुरक्का' की संज्ञा दी है। 'मुरक्का' यानी ऐसी रचना जो पढ़ंत और बजंत दोनों के लिए कठिन होती है। विद्वानों ने ऐसे कई मुरक्कों की रचना निर्मिती कर ले तबला जगत पे अनंत उपकार किए है। एक आध मुरक्के के रियाज़ से ही उसमें आया हुआ प्रमुख बोल हाथपर चढ़ने में वादक

को सुलभता महसूस होती है। ऐसा ही एक 'मुरक्का' त्रक इस बोल के लिए है, जो निम्नलिखित है। इस मुरक्के के रचनाकार है—उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब (अजराडा घराना):-

कायदा : मुरक्का – तीनताल (उस्ताद हबीबुद्दीन खाँसाहब)

घेनानागेधीनधागे x	नागेधीनधागेत्रक	धागेनाधात्रकधीन	धागेत्रकधींनागिना	।
धागेनागेधीनधागे 2	नागेधीनधागेत्रक	धागेनाधात्रकधीन	धागेत्रकतींनाकिना	। खाली

रेला

रेला यह विस्तारक्षम रचनाप्रकार अपनी गतिमानता के लिए प्रसिद्ध है। गतिमानता के साथ-साथ बोलों की वादनस्पष्टता भी उतना ही महत्त्व रखती है। 'रेला' प्रकार में भी अगणित बोलो के आधार पर मुरक्को की रचना विद्वानों द्वारा की गयी है। कायदा-रेला वादन में (रियाज़ में) मुरक्को के वादन का बड़ा ही महत्त्व है। रेला यह एक व्यंजनप्रधान बोलो की रचना होती है, जिसमें बोलों की स्पष्टता महत्त्व रखती है। अर्थात, ऊपर के मंगिल में भी उन बोले को वादन उतना ही गतिमान एवं सशक्त होना जरूरी होता है। इसलिए, वादक को अक्षरसाधना के बाद 'रेल' वादन द्रुतलय में करने का अनुभव भी करना चाहिए। इसी से, वादक का 'दमसास' बढ़ता है और दीर्घकाल तक रहता भी है। लेकिन, यह सब दीर्घकाल के रियाज़ से ही संभव है। विद्वानों ने 'रेला रचना प्रकार' के रियाज़ के लिए असंख्य बंदिशों की निर्मिती की है।

रेला : तीनताल (पं. अरविंद मुलगांवकर)

तिरकिटतिरकिट x	धाऽधाऽतिरकिट	धाऽतिरकिटतिर	किटधाऽतिरकिट	।
तकधाऽतिरकिट 2	धाऽतिरकिटतिर	किटधाऽतिरकिट	तींऽनाऽकिडनग	। खाली

लडी

'लडी' रचना प्रकार में बोलो की लड यानी बोल माला की भाँति गुँथे हुए होते थे। जैसे मणि माला में पिरोई होती है, ठीक उसी प्रकार लडी में बोल पिरोयें होते है। लडी का आरंभ तथा अंत जल्दी समझ में नहीं आना। लड़ी यह रचना प्रकार रियाज़ के लिए उपयुक्त है क्योंकि ऐसी रचना फलक में बजाने में काफी कष्टप्रद होती है। 'लड़ी' दिल्ली घराने की विशेषता है। 'लड़ी' एक प्रकार की गत होती है।[6] उस्ताद शलारी खाँ साहब की एक प्रसिद्ध लड़ी निम्नलिखित है।

ताल : एकताल – लडी (उ. शलारी खाँसाहब)

धाऽतीट घिडतीट x	घिडनग धाऽतीट	।	घिडनग धाऽतीट 0	घिडतीट घिडनग	।	
धाऽतीट घिडतीट 2	घिडतीट घिडनग	।	धाऽतीट घिडतीट 0	घिडतीट घिडनग	।	
धाऽतीट घिडतीट 3	घिडनग धाऽतीट	।	घिडनग धाऽतीट 4	घिडतीट घिडनग	।	खाली

टुकडा, चक्रदार इत्यादी पूर्वसंकल्पित रचनाओं का रियाज़:-

तबले की रचनाएँ जैसे, गत, गनतोडे, चक्रदार, तिहाई इत्यादि पूर्वसंकल्पित रचनाओं के नाम से जानी जाती है। उसी प्रकार, पारंपारिक बंदिश, परन, टुकड़े आदि रचनाएँ पूर्वसंकल्पित रचनाएँ होती है। तबलावादन के रियाज़ में इन पूर्वसंकल्पित रचनाओं का रियाज़ भी बड़ा महत्त्व रखता है क्योंकि तरीके से होना जरूरी होता है। जैसे, कायदे-रेले का महत्त्व है, उसी प्रकार पूर्वसंकल्पित रचनाओं का एक अलग ही महत्त्व एवं स्थान है। यह बंदिश असरदार एवं वजनदार तरीके से प्रस्तुत होनी चाहिए। केवल रियाज़ी हाथ से ही ये सब मुमकीन होता है। इन प्रत्येक रचनाओं में वादन के साथ-साथ वादक का अभ्यास और रियाज़ आत्म-विश्वास से झलकता है। 'बजंत' के साथ-साथ इन रचनाओं की 'पढंत' भी वादक के प्रस्तुति पर अलग प्रभाव डालती है। इस प्रकार से, स्वतंत्र तबलावादन में पूर्वसंकल्पित रचनाओं का महत्त्व है। ठीक उसी तरह, इन रचनाओं का अलग तरीके से रियाज़ होना आवश्यक है।

उस्ताद हाजी विलायत अली साहब की एक मुरक्का गत (बराबर लय) दे रहा हूँ, जो 'धीरधीर' के वादन और रियाज़ के लिए उपयुक्त है—

मुरक्का गत – तीनताल (उ. हाजी विलायत अली खाँसाहब)

धीरधीरकिटधाऽ	तिरकिटधींऽनाऽ	।	किटधाऽकिटधाऽ	तिरकिटधींऽनाऽ	।
x			2		
किटधाऽतिरकिट	धींऽनाऽकिटतक	।	तीरतीरतीरधीर	धीरधीरधीरधीर	। खाली
0			3		

इस प्रकार, प्रस्तुत उपघटक के अंतर्गत हमने तबला वादन की विस्तार क्षम एवं पूर्वसंकल्पित रचनाओं के रियाज़ के बारे में चर्चा की। आगे, 'शारीरिक रियाज़' के अंतर्गत हम रियाज़ की 'चिल्ला पद्धति' पर प्रकाश डालेंगे।

रियाज़ की चिल्ला पद्धति

'तबला वादनः कला और शास्त्र' के रचयिता पं. सुधीर माईणकर 'चिल्ला' पद्धती के बारे में कथन करते है की, ''एकाध मुश्किल निकास के शब्दाक्षर जिस रचना में होते है, उस रचना का दैनंदिन 'घंटे दो घंटे' सातत्य के साथ 40 दिन तक निरंतर बजाने को 'चिल्ला करना' कहते है।[7]

उधर दूसरी तरफ, ज्येष्ठ तबला वादक और गुरु पं. अरविंद मुलगाँवकर अपनी पुस्तक 'तबला' में इस प्रकार व्याख्या करते हैं—

''तबला वादन में कर्णमधुरता और मिठास महत्त्वपूर्ण है। उसके बाद गतीमानता और लयबंध की किलष्टता। आदर्श तबलावादन के लिए यह तीनों बाते अत्यंत महत्त्वपूर्ण है और इसे साधने के लिए तबलावादक के बायें तथा दाएँ हाथ पर प्रमाणबद्ध प्रभुत्व होता जरूरी है। ये सब केवल रियाज़ से एकनिष्ठ रहकर ही साध्य हो पाता है। रियाज़ के लिए सुबह का समय आदर्श होता है जो कि रियाज़ की आदर्श पद्धति है 'चिल्ला लगाना'। आदर्श तबलावादक बनने के लिए रियाज़ करना महत्त्वपूर्ण है।''[8]

केवल रियाज़ नहीं बल्कि समझ से किए गए रियाज़ से ही अपने वादन में कौशल्य और कलात्मकता आती है, ऐसा विद्वानों का विचार है। इसलिए, तबले के प्रत्येक घरानों ने रियाज़ की विविध पद्धतियाँ निर्माण की और विकसित भी की। तबलावादक के रियाज़ की इन पद्धतियों का स्वागत करते हुए अपने प्रभावी एवं सफल वादन के लिए प्रस्तुत होना चाहिए। ऐसे रियाज़ को 'आदर्श रियाज़' करना उचित होगा। तबलावादक को 'रियाज़' अलग-अलग अंगों से और दृष्टिकोण से देखना जरूरी है। उन्हें रियाज़ की पद्धतियाँ को ध्यानपूर्वक और खुद को उसमें भलीभाँति ढालकर एक सच्चे साधक और वादक कलाकार के मार्ग पर मार्गस्थ होना चाहिए। इसे ही हम एक अभ्यासपूर्वक किया गया रियाज़ कहेंगे। तबले के रियाज़ के बारे में उस्ताद अमीरहुसैन खाँ साहब के कथन को बताते हुए पं. अरविंद मुलगाँवकरजी अपनी 'तबला' पुस्तक में लिखते हैं—

''यह सुबह का समय फरिश्तों के टहलने का समय होना है, वे अपने को दुआ देते है।''[9] इस प्रकार, खाँ साहब रियाज़ के लिए सुबह का समय की पसंद करते थे। वे कहते थे कि, रियाज़ मन से और गुरु के मार्गदर्शन एवं सहवास में होना चाहिए। विविध बोलों का, मुरक्कों का चिल्ला लगाकर रियाज़ करते के पद्धति खाँ साहब ने इतनी दृढ़कर दी की आज भी तबला वादकों में खाँ साहब का नाम हमेशा अग्रणी क्रम में ही लिया जाता है। सचमुच, विद्वानों द्वारा निर्मिती रियाज़ की यह 'चिल्ला पद्धति' तबला जगत के लिए एक अनमोल भेट है, ऐसा करना उचित होगा। इस प्रकार प्रस्तुत घटक के अंतर्गत हमने शारीरिक रियाज़ के बारे में विस्तृतता से जाना। आगे हम बौद्धिक रियाज़ पर प्रकाश डालेंगे।

बौद्धिक रियाज़ः

संगीत कला के रियाज़ में सबसे महत्त्वपूर्ण अंग है 'बौद्धिक रियाज़', जिसे सैद्धांतिक रियाज़ भी कहते है। शारीरिक रियाज़ का मूल आधार क्रियात्मक स्तर होता है और बौद्धिक रियाज़ का स्तर होता है—शास्त्र। इस शोध विषय के अंतर्गत हमने प्रथम शारीरिक रियाज़ की याने क्रियात्मक पक्ष की विस्तृत चर्चा की लेकिन विचार से रियाज़ की पहली सीढ़ी है 'बौद्धिक रियाज़'। जैसे हमने पहले कहा कि रियाज़ अभ्यासपूर्ण होना चाहिए। इसका मतलब यह है कि रियाज़ के पूर्व उसके बारे में भलीभाँति समझकर, शोधार्थी के रियाज़ होना चाहिए याने रियाज़ के पूर्व अभ्यास की अपेक्षा है। यह अभ्यास याने समझने की क्रिया होती है, इसी अभ्यास क्रिया को हम 'बौद्धिक रियाज़' की संज्ञा देंगे। विद्वानों ने रियाज़ के बारे में विवेचन करते समय 'बौद्धिक रियाज़' पर ही महत्त्व दिया है। इस उपघटक के अंतर्गत हम आगे कुछ प्रमुख तत्व देखेंगे, जैसे—

पढ़ंत

'पढ़ना' इस क्रियापद से 'पढ़ंत' शब्द उत्पन्न हुआ है। पढ़ना याने बोलना। तबले की विविध रचनाएँ विशिष्ट लय में स्थिर रहकर मात्राबद्ध तरीके से पढ़ना जरूरी होता है। इसी क्रिया को 'पढ़ंत' कहते है। मेरे विचार से, पढ़ंत यानी बौद्धिक रियाज़ है, जिसके नित्य क्रिया से सूक्ष्म संस्कार होता

है और यहीं संस्कार लेकर वादक उतनी ही कुशलता से अपना वादन प्रस्तुत करता है। बुद्धि मानव मस्तिष्क को स्पष्ट पढ़ंत करने हेतु जुबान को आज्ञा देती है और वही बुद्धी वादन के लिए ऊँगलियाँ को भी आज्ञा देती है। इस प्रकार, बुद्धी के संस्कार का बड़ा महत्त्व है। कहने का तात्पर्य यह है की ऐसे संस्कारों के जरिए किए गए 'पढ़ंत' क्रिया का सीधा और पूरक असर वादक के तबला वादन पर होता है, जो काफी प्रभावी साबित होता है। विद्वान कहते है, 'जैसी पढ़ंत वैसी बजंत', 'पढ़ंत स्पष्ट, वादन स्पष्ट'। यह उनके अनुभवजन्य विचार है, जो तबला जगत को मिली एक पूंजी है। तबलावादक को 'पढ़ंत' का रियाज़ कर के उसका अनुभव लेना जरूरी है। इस प्रकार, बौद्धिक रियाज़ में 'पढ़ंत' का अनन्य साधारण महत्त्व है।

'पढ़ंत' बौद्धिक रियाज़ का मूलतत्व है। विद्वानों ने 'पढ़ंत' को तबले के 'व्याकरण' की उपमा देकर, उसका ओर भी महत्त्व दर्शाया है।

तबले की भाषा सौंदर्यता समृद्ध हैं और बगैर व्याकरण किसी भी भाषा की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इसी से, पढ़ंत रूपी व्याकरण का तबले की भाषा में निहीत महत्त्व हमें दिखायी देता हैं। तबला साधक को स्थिर लय में मात्राबद्ध रचना को स्पष्टता से बोलकर पढ़ंत करने का रियाज़ करना अनिवार्य है। तबले की भाषा सौंदर्य का शब्द संकीर्तन है 'पढ़ंत'। बौद्धिक रियाज़ का मूलभूत तत्व है 'पढ़ंत'। मेरे विचार से तबले के रियाज़ की पहली और महत्त्वपूर्ण क्रिया है 'पढ़ंत'।

एकल तबला वादन में पढ़ंत की भूमिका अत्यंत एहम् और महत्त्वपूर्ण होती है। तबले की अनेक रचनाओं से श्रोतागण अनभिज्ञ रहते है, लेकिन वादक जब उन रचनाओं की पढ़ंत करते हुए उनकी प्रस्तुति करता है, तब श्रोतागण भी उसका आनंद ले पाते हैं। रचनाओं मे निहित उतार-चढ़ाव, विराम, रहस्व-दीर्घ आदि उच्चार, विविध अक्षरों के दर्जे, दाएँ का स्वर और बाएँ में आयी हुई मींड की अनुभूति आदि क्रियायों की अनुभव पढ़ंत द्वारा ही वादक दे पाता है। तबला वादन के प्रभावी 'बजंत' की अभिव्यक्ति होती है 'पढ़ंत। इस प्रकार, एकल तबला वादन का प्रभावी अंग है 'पढ़ंत'। एकल तबला वादन में 'पढ़ंत' के स्थान एवं महत्त्व की विशेषता है। इस प्रकार हमने तबले के रियाज़ में 'पढ़ंत' की महत्त्वता अत्यधिक है। संक्षेप में, तबलावादक को 'जिनकी जुबान साफ उनका हाथ साफ', यह मूलभूत विचार का स्वीकार करते हुए अपना रियाज़ करना है। क्योंकि 'पढ़ंत द्वारा' ही तबले हर एक रचना सजीव बनकर साकार हो पाती है। तबला वादन का एक महत्त्वपूर्ण सौंदर्यतत्व है 'पढ़ंत'।

'पढ़ंत' के लिए कुछ आवश्यक क्रिया—

- ❖ प्रथमत: बोलरचना को एक विशिष्ट गती में (लय में) पढ़ना।
- ❖ इस प्रकार से कंठस्थ हुई रचना को गेयता देकर उसको बराबर लय में चुटकी बजाकार या केवल हाथ से ताली देकर बोलना।
- ❖ बोलरचना की मात्रा बद्धता समझने हेतू उस रचना का मापन ऊँगलियें द्वारा गिनकर करना और रचना की पढ़ंत करना। इससे उस रचना का मात्रा काल अपने आपको समझने में सुलभता मिलती है।
- ❖ मात्राबद्ध बोल रचना का हाथ से ताली देकर खाली-भरी क्रिया दिखाते हुए उसकी पढ़ंत करना। यह क्रिया वादक कलाकार का पढ़ंत के प्रति अंतिम ध्येय रहता है और रहना भी चाहिए।

उपरोक्त, क्रिया को क्रमानुसार करने से वादक को 'पढ़ंत' के रियाज़ में काफी अच्छे अनुभव मिल सकते है, ऐसा शोधार्थी का विचार है।

तबला वादक को रियाज़ के पूर्व अभ्यास करना आवश्यक है, ऐसा पहले भी कहा गया है। यह पूर्व अभ्यास ही 'पढ़ंत' है। पढ़ंत से ही बोल रचना सजीव बनती है और उसके बाद योग्य निकास पद्धति जानकर वही बोल रचना प्रत्यक्ष अक्षरसाधना के लिए प्रस्तुत होती है। यहाँ पर शुरू होता है, शारीरिक रियाज़, यानी पढ़ंत और योग्य निकास जानकर सजीव बनी बोलरचना को साकार बनाने की क्रिया। लेकिन उसके पूर्व बौद्धिक रियाज़ के अंतर्गत गुरु के मार्गदर्शन में 'पढ़ंत' और 'निकास' जान लेना और उसको समझना जरूरी है। शोधार्थी का विचार है कि, 'पढ़ंत की आचरित कृती है बजंत'। इसलिए पढंत का विचार होना अत्यंत आवश्यक है। कहते है ना, 'जैसा विचार वैसा आचार'। इसलिए रियाज़ी तबलावादक के लिए पढ़ंतरूपी विचार होना अत्यंत मूलभूत है।

हम रचनाओं की 'पढ़ंत' करते है यानी उन बोलो की पुन:-पुन: बोलने की क्रिया करते है। संगीत की भाषा में इस क्रिया को तबला अच्छी तरह 'याद' किया है, ऐसा कहा जाता है और ऐसा 'याद' किया तबला ही प्रत्यक्ष वादन क्रिया में चिरंतन रहता है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है तबला जगत के विद्वानों का तबलावादन, उनके अनुभव इत्यादि। इस प्रकार पढ़ंत याने बौद्धिक रियाज़ का अत्यधिक महत्त्व है।

तबला वादक पं. अरविंद मुलगाँवकर जी ने अपने ग्रंथ 'तबला' में रियाज़ी विद्यार्थियों के लक्षण बताए है, जो निम्न प्रकार से है—[10]

- निरीक्षण शक्ति
- आकलन शक्ति
- बुद्धिमत्ता
- वादनक्षमता
- चिकाटी

इस प्रकार, हमने प्रस्तुत 'तबला वादन में रियाज़ का महत्त्व' इस शोध विषय के अंतर्गत सैद्धांतिक तथा क्रियात्मक स्तर पर शारीरिक रियाज़ और बौद्धिक रियाज़ के बारे में विस्तृत चर्चा की है। हिंदुस्तानी अभिजात संगीत परंपरा में कई समय पहले से एक खानदानी उपदेश दृढ़ हुआ और वो है, 'देखना, सुनना, परखना और बजाना'। मेरे विचार से यह उपदेश रियाज़ के संदर्भ में अत्यंत उपयुक्त और योग्य है। यह सब पाने के लिए योग्य गुरु होना और भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि गुरु से एकनिष्ठ रहकर रियाज़ करने वाले साधक को सफलता नि:संशय मिलती ही है। गुरु से

एकनिष्ठ रहकर किया गया कोई भी कार्य यानी निश्चित सफलता। इसलिए संगीत कला के रियाज़ में गुरु का बड़ा महत्त्व है। गुरु का सतत सहवास, ज्ञान लालसा और अथक मेहनत याने रियाज़ करना ये एक अच्छे शिष्य के लक्षण है। रियाज़ के साथ-साथ चिंतन और मनन होना भी आवश्यक है। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है की अपने रियाज़ से आत्मिक संतुष्टि मिलती है। एक ईमानदार तबलावादक अपने नित्य रियाज़ से इन सब बातों का अनुभव कर पाता है। इस प्रकार के सातत्यपूर्ण रियाज़ से ही तबलासाधक को नाद की सूक्ष्मता एवं विविध सौंदर्य तत्वों की अनुभूती मिलती है। नित्य रियाज़ से साधक की आँकलन शक्ति तथा बुद्धिमत्ता दोनों को दृष्टि मिलती है और इसका पूरक परिणाम यह होता है की साधक के कला प्रस्तुति क्षमता में बढ़ोत्तरी और प्रगति होती है। नित्य रियाज़ से विचारशक्ति में संवर्धन होता है और साधक के वादनक्षमता का भी विकास होता है। इसी से यह स्पष्ट होता है की, नित्य रियाज़ और कला प्रस्तुति इनका कितना गहरा और घनिष्ठ संबंध है। तबलावादक की कला प्रस्तुति उसके रियाज़ की अभिव्यक्ति होती है, उसके वादन में रियाज़ ही झलकता तथा प्रतिबिंबित होता है। इसलिए कहते है, ''पेशकार वादन से वादक का बुद्धि कौशल्य, कायदे से हाथ तैयारी तथा रेले से वादक का दमसास यह गुण दीखायी देते है।'' 'स्वतंत्र तबला वादन' हो या 'साथसंगत', दोनों के लिए 'रियाज़ी हाथ होना आवश्यक है।

वर्तमान में तबला वाद्य ने अपना सर्वांगीण विकास साधते हुए अपना श्रेष्ठत्व और अस्तित्व बनाएँ रखा है, लेकिन इस श्रेष्ठत्व की अनुभूति केवल योग्य रियाज़ से ही होगी। इसी से साधक की ध्येयपूर्ती निश्चित है। योग्य गुरु से ली गयी तालीम तथा उस पर शिष्य द्वारा किया गया रियाज़ ही एक सफल कलाकार का द्योतक होता है, ऐसा मेरा प्रामाणिक मत है। गुरु के मार्गदर्शन में किया गया रियाज़ ही कलाकार के उच्च कलात्मकता की फलश्रुति है, ऐसा मेरा विश्वास है। रियाज़ से ही तबला साधक का सर्वांगीण विकास होता है और ऐसे रियाज़ी तबलासाधक द्वारा ही संगीत में तालवाद्य के लिए रहनेवाली हर एक अपेक्षा की पूर्ति होती है, यह निश्चित है।

सचमुच, 'रियाज़ ही संगीत कला का मूलभूत सत्य है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. माईणकर, सुधीर, 'तबला-वादन कला और शास्त्र', हिंदी अनुवाद, गांधर्व महाविद्यालय प्रकाशन, 2000, पृ. 69
2. साक्षात्कार : मुळगाँवकर, अरविंद, ज्येष्ठ तबला वादक और विचारवंत, दि. 24/11/2017
3. साक्षात्कार : मुळगाँवकर, अरविंद, ज्येष्ठ तबला वादक और विचारवंत, दि. 24/11/2017
4. साक्षात्कार : माईणकर, सुधीर, ज्येष्ठ तबला वादक और विचारवंत, दि. 24/11/2017
5. साक्षात्कार : शिरोडकर, विश्वनाथ, तबला वादक और विचारवंत, दि. 11/12/2017
6. माईणकर, सुधीर, Opcit : पृ. 78
7. वही, पृ. 66
8. मुळगाँवकर, अरविंद, 'तबला', मराठी, पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई, तृतीय आवृत्ती 2016, पृ. 303
9. वही, पृ. 308
10. वही, पृ. 298